विस्तृत रूपरेखा

I. रानी वशती पद से हटा दी गई (1:1-22)

A. छह महीने के एक भोज के लिए राजा प्रधानों को एकत्रित करता है (1:1-4)

B. शूशन के राजगढ़ के लिए सात दिवस के पर्व में राजा मेज़बानी करता है (1:5-9)

C. अपनी रानी के लिए राजा का पापमय निवेदन और उस रानी द्वारा इनकार किया जाना (1:10-12)

D. राजा के द्वारा अपनी रानी को उसके पद से हटाना (1:13-22)

1. एक योजना की आवश्यकता पड़ी (1:13-15)
2. एक योजना का प्रस्ताव रखा गया (1:16-20)
3. एक घोषणा पारित की गई (1:21, 22)

II. एस्तेर रानी बनती है (2:1-18)

A. वशती का स्थान बदलने के लिए राजा की योजना (2:1-4)

B. प्रतियोगिता में एस्तेर का प्रवेश (2:5-14)

1. एस्तेर का परिचय (2:5-7)
2. प्रतियोगिता के लिए एस्तेर की तैयारी (2:8-11)
3. प्रतियोगिता के नियम (2:12-14)

C. रानी के रूप में राजा के द्वारा एस्तेर का चयन (2:15-18)

III. मोर्दकै राजा का प्राण बचाता है (2:19-23)

IV. यहूदी, हामान के कारण विनाश का सामना करते हैं (3:1-15)

A. हामान की पदोन्नति और मोर्दकै के द्वारा उसे आदर देने से इंकार करना (3:1-6)

B. यहूदियों को नष्ट करने के लिए हामान की युक्ति (3:7-11)

C. हामान की घोषणा (3:12-15)

V. एस्तेर, हामान की योजना का सामना करने के लिए सहमत होती है (4:1-5:4)

A. मोर्दकै का एस्तेर से निवेदन (4:1-17)

1. मोर्दकै का विलाप (4:1-3)

2. मोर्दकै के लिए एस्तेर की चिन्ता और मोर्दकै का प्रत्युत्तर (4:4-8)
3. मोर्दकै का शक्तिशाली निवेदन (4:9-14)
4. राजा के सम्मुख जाने के लिए एस्तेर का निर्णय (4:15-17)

B. राजा के सम्मुख एस्तेर की सफलतापूर्वक पहुँच (5:1-4)

VI. हामान दोषी ठहराया जाता है और दण्डित किया जाता है (5:5-7:10)

A. एस्तेर का प्रथम निवेदन (5:5-8)
B. मोर्दकै को फाँसी पर लटकाने के लिए हामान की योजना (5:9-14)
C. मोर्दकै को राजा से आदर प्राप्त होना (6:1-11)
D. हामान का अपमान (6:12-14)
E. एस्तेर का दूसरा निवेदन (7:1-6)
F. हामान के लिए राजा की ओर से मृत्युदण्ड (7:7-10)

VII. यहूदी बचा लिए गए और वे पूरीम पर्व मनाते हैं (8:1-10:3)

A. राजा की आज्ञा (8:1-17)
   1. मोर्दकै की पदोन्नति (8:1, 2)
   2. यहूदियों के लिए एस्तेर का निवेदन (8:3-8)
   3. स्वयं का बचाव करने के लिए यहूदियों को स्वीकृति देने वाली नई आज्ञा का लिखा जाना (8:9-14)
   4. आज्ञा का परिणाम (8:15-17)
B. यहूदियों की विजय और उत्सव मनाया जाना (9:1-32)
   1. यहूदियों के शत्रुओं का विनाश (9:1-10)
   2. शूशन में प्रतिशोध का दूसरा दिन (9:11-15)
   3. यहूदियों के द्वारा अपनी विजय का उत्सव मनाया जाना (9:16-19)
   4. पूरीम पर्व ठहराया गया (9:20-32)
C. उपसंहार (10:1-3)